आलू की उन्नत खेती

आलू को सब्जियों का राजा कहा जाता है। आलू की औसत पम्दावार 160 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, जो विकसित देशों की तुलना में बहुत कम है, जिसके कई कारण हैं उनमें उन्नत किस्मों के स्थान पर परम्परागत किसमों को उगाना और फसल की उचित देखभाल न करना आदि प्रमुख है। आलू की उन्नत किस्में और वेज्ञानिक विधि अपनाकर किसान भाई आलू की अधिक पैदावार ले सकते है।

जलवायु :– आलू की समुचित बढ़वार एवं विकास के लिए हल्की ठण्डी जलवायु की आवश्यकता होती है। आलू की रोपाई के लिए उचित तापमान 24– 25 डि.से. होता है। इसमें कम तापमान होने पर इसके अंकुरण में विलम्ब हो जाता हे ओर उपज भी कम मिलती है।

मिटट्री :– आलू को विभिन्न प्रकार की मिटट्री में उगाया जा सकता है, परन्तु इसकी अधिक पैदावार लेने के लिए उचित जल निकासी कार्बनिक पदार्थो से भरपुर बलुई दोमट मिटट्री सर्वोत्त्म मानी गयी है।

उन्नत/संकर किस्में :– आलू की अनेक उन्नत/संकर किस्में है, जिन्हे उगाकर अधिक पैदावार ली जा सकती है, जिनका उल्लेख सारणी –1 में किया गया :–

सारणी–1 आलू की संकर/उन्नत किस्मों का विवरण

क	अगेती किस्में	पकने की अवधि	क्षेत्र	पैदावार /हे.
1.	कुफरी चन्द्रमुखी	70–80 दिन	उ.प्र.,बिहार, प. बंगाल के गंगीय मैदानी क्षेत्रों के लिए	150–200
2.	कुफरी अशोक	70–80 दिन	तदैव	200–250
ख	मध्यम किस्में			
1.	कुफरी बहार	90–110 दिन	उ.प्र., पंजाब, हरियाणा और दिल्ली के मैदानी क्षेत्रों के लिए	200–250
2.	कुफरी जवाहर	100–110 दिन	पंजाब,उ.प्र. एवं हरियाणा के मैदानी क्षेत्रों के लिए	200–250
3.	कुफरी सतलुज	100–110 दिन	तदैव	200–250
ग	पछेती			
1.	कुफरी बादशाह	115–130 दिन	उ.प्र. के पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों के लिए	250–300
2.	कुफरी सिन्दुरी (लाल कंद)	120–140 दिन	उत्तर भारत और बिहार के क्षेत्रों के लिए	250–300

Thank you for trying PDF Suite

खाद एवं उर्वरक :– आलू की भरपुर उपज लेने के लिए मृदा जांच के आधार पर खाद एवं उर्वरकों का उपयोग करें। यदि किसी कारणवश मृदा जांच न हो पाये तो उस स्थिति में प्रति हैक्टर निम्न मात्रा में खाद एवं उर्वरक अवश्य डालें :

गोबर की खाद – 15–20 टन

नाइट्रोजन – 120–150 कि.ग्रा.

फासफोरस – 80 कि.ग्रा

पोटाश – 80–100 कि.ग्रा.

गोबर की खाद प्रथम जुताई से पूर्व खेत में समान रुप से बिखेर कर मिटट्ी पलटने वाले हल से जुताई करें। बुवाई से पूर्व आधी नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा मेंढ़ निर्माण से पूर्व भूमि पर बिखेर दें। इसके उपरान्त मेंढ़ों और सिंचाई नालियों का निर्माण करें। नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा रोपाई के 30–35 दिन बाद मिटट्ी चढ़ाने के पूर्व व सिंचाई देने के बाद दें

सिंचाई :– आलू की फसल में हघ्ल्की व जल्दी सिंचाई की आवश्यकता होती है। सिंचाई करते समय इस बात का विशेष रुप से ध्यान रखें कि मेंढ़ों में पानी हमेशा 3/4 ऊॅचे हिस्से तक ही दें । आलू अच्छी नमी वाली भूमि में ही लगायें एवं सिंचाई पौध उग आने के लगभग 15–20 दिन बाद करें। दूसरी सिंचाई पहली सिंचाई के 15 दिन बाद करें। स्टोलोनाइजेशन एवं कंद निर्माण की अवस्था में सिंचाई की न होने दें। आलू खोदने से 10 दिन पहले सिंचाई बंद कर दें।

रोपाई का समय :– उत्तरी भारत के गंगीय मैदानी क्षेत्रों में आल की रोपाई का उचित समय 15 सितम्बर से 30 अक्टूबर है।

रोपाई विधि :– खेत में पूर्व से पश्चिम दिशा में मेंढ़े 50–60 से.मी. की दूरी पर बनायें और बीज को मेंढ़ के उत्तरी ढलान पर 20–25 से.मी. की दूरी पर लगायें।

बीज की मात्रा :– बीज की मात्रा इस बात पर निर्भर करती है कि उसके लिए कंद कितने ग्राम का उपयोग किया जाता है। यदि 30–40 ग्राम का आलू लिया जा रहा है तो एक हेक्टेयर के लिये 30–40 क्विंटल बीज की आवश्यकता होती है।

बीजोपचार :– आलू की फसल को फफूंदी जनित रोगों से बचाने के लिए कंदों को एगलाल 5 ग्राम या एमिसन 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल में उपचारित करें।

Thank you for trying PDF Suite

खरपतवार नियंत्रण :– आलू की अधिक उपज लेने के लिए फसल में खरपतवार नही पनपने दें, क्योकि वे नमी, पोषक तत्वों को चट कर जाते है, जिसके कारण फसल की बढ़वार , विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही उपज भी घट जाती है। इसके लिए खरपतवारों को बार–बार खुरपी से निकालते रहें। खरपतवारनाशियों का उपयोग करना चाहिए।

पेराक्वोट :– 1.0 किलोग्राम प्रति हैक्अटर को 600–700 लीटर पानी में रघोलकर 5 प्रतिशत आलू का अंकुरण होने पर छिड़के।

मैट्रीब्यूजीन (सेन्कोर) :–

0.375 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर को 600–700 लीटर पानी में मिलाकर अंकुरण पूर्व छिड़के।

मिटट्ी चढ़ाना :– आलू उत्पादन में मिटट्ी चढ़ाने का विशेष महत्व है। अतः इसकी फसल रोपाई के 30–35 दिन बाद सिंचाई और रनाइट्रोजन की शेष मात्रा डालने के उपरान्त मेढ़ों पर मिटट्ी चढ़ायें।

पौध संरक्षण उपाय :– आलू की फसल पर विभिन्न प्रकार के कीट व रोगों का प्रकोप होती हैघ। कीट एवं रोगों की समय पर रोकथाम करके अधिक एवं उच्च गुणवत्ता वाले कंद प्राप्त किये जा सकते है।

कीट :– आलू की फसल में मूख्यतः कुतरने वाले कीट जैसे जैसिड, माहू व एफिड अधिक क्षति पहुॅचाते है। वे पत्तियों और तनों का रस चूसते है जिनके कारण पत्तियों के भोजन निर्माण में बाधा उत्पन्न होंती है।

रोकथाम :–

1. एण्डोसल्फान 40 प्रतिशत वाला 25–30 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से खेत की तैयारी कें समय भूमि में मिला दें।

2. एण्डोसल्फान 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर दोनों कीटों का प्रकोप दिखाई देते ही छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर 15 दिन के अन्तराल पर फिर छिड़काव करें।

Thank you for trying PDF Suite

रोग :–

अगेती अंगमारी – यह रोग फफूंदी के कारण होता है, जिसके कारण पत्तियों पर गहरे भूरे रंग के धब्बों का निर्माण हो जाता है जिसके कारण पौधे अपना भोजन नही बना पाते है और परिणाम स्वरुप उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

पछेती अंगमारी – यह रोग भी एक प्रकार की फफूंदी के कारण होता है। पत्तियों के किनारे पर छोटे भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते है। मौसम में अधिक आद्रता होने या बादल होने पर यह रोग तीव्र गति से फैलता है।

रोकथाम – डायथेन एम–45 जड़ –78 या ब्लॉइटाक्स 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर भली भॉति पत्तियों पर छिड़के, ताकि पत्तियां दोनों ओर से भीग जायें।

पत्तियों का मुड़ना – इस रोग के कारण पत्तियां मुड़ जाती है।

रोकथाम – रोग के लक्षण दिखाई देने पर पौधों को निकालकर जला दें या भूमि में गहरा दबा दें।

खुदाई – जब पौधों की पत्तियां पीली पड़ जाए या सुख जाए व आलू का छिलका कठोर हो जाए तो खुदाई करनी चाहिए। मेंड़ो के बीच में हल चलाकर फसल की खुदाई करें। टो टिलर के द्वारा भी आलू की खुदाई की जा सकती है।

Thankyou for trying PDF Suite